

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

जन्म : 15 सितम्बर '27

निधन : 24 सितम्बर '83

दुख तुम्हें क्या तोड़ेगा
तुम दुख को तोड़ दो
केवल अपनी आँखें
औरों के सपनों से जोड़ दो ।



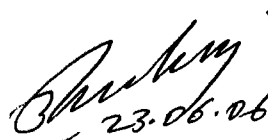
डॉ. अर्जुन चव्हाण
एम्. ए. बी. एड्. पी-एच. डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर- ४१६००४

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि "सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में अभिनेयता"
लघु शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

स्थान- कोल्हापुर

तिथि:- 23 JUN 2006


(डॉ. अर्जुन चव्हाण)
Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University,
Kolhapur-416004

डॉ. कृष्णकान्त पाटील
एम.ए. पी.एच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवराज महाविद्यालय, गडहिंगलज
जिला- कोल्हापुर ।

प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री शिवराज गणपती शिंदे ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल्.(हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध "सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में अभिनेयता" मेरे मार्गदर्शन में पूरा किया है। यह उनकी मौलिक रचना है। जो तथ्य इस लघु-शोध प्रबंध में प्रस्तुत किये गए हैं; मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पुरी तरह से संतुष्ट हूँ।

स्थान-कोल्हापुर ।

तिथि:- 23 JUN 2006

शोध-निर्देशक,



(डॉ. कृष्णकान्त पाटील)
प्रा. डॉ. कृष्णकान्त पाटील

एम.ए. पी.एच्.डी.
हिंदी विभाग, शिवराज महाविद्यालय
गडहिंगलज - ४१३ ५०२

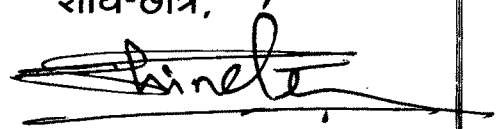
प्रख्यापन

“सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में अभिनेयता”

यह लघु शोध-प्रबंध सर्वथा मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले किसी भी विश्वविद्यालय में ; किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान - कोल्हापुर।

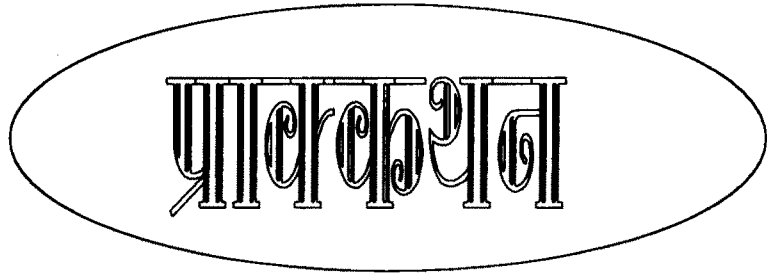
शोध-छात्र,



तिथि:- 23 JUN 2006

(श्री. शिवराज गणपती शिंदे)





प्राक्कथन

विषय चयन की प्रेरणा

बचपन से ही मेरा अभिनय के प्रति लगाव रहा है। अभिनय करने की तीव्र इच्छा बहुत वर्षों से मेरे मन में समायी हुयी है। मैं अपने दोस्तों का मनोरंजन किया करता था। मेरे दोस्त हमेशा कहते थे कि मैं नाटक में अच्छा अभिनय कर सकूँगा। दुर्भाग्यवश नाटक में अभिनय करने की आकांक्षा अभी तक पूरी नहीं हो पायी है। मैं राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापुर में अध्यापन कार्य कर रहा था। उसी समय शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर में एम्. फिल्. की शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी बहाने मुझे मेरी अधुरी कामना पूरी करने का मौका प्राप्त हो गया। लेकिन मैंने संशोधन के लिए विधा अभिनय से संबंधित विषय का ही चयन किया। मेरे अन्य दोस्त एवं सहपाठी नाटक विधा में संशोधन करने से कतरा रहे थे; मैंने अपने शोध-विषय के क्षेत्र का चुनाव तो किया, मगर अभी भी रचनाकार चुनना बाकी था। पुस्तकालय में अनेक रचनाकार देखें। अन्य नाटककारों की अपेक्षा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटक मुझे अच्छे लगे। इसलिए मैंने सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का अध्ययन करने का फैसला किया। मेरे विषय के बारे में मार्गदर्शक डॉ. कृष्णकांत आर. पाटील जी से इस विषय पर चर्चा की। उन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया। उन्होंने 'सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में अभिनेयता' विषय के लिए स्वीकृति ही नहीं; बल्कि प्रेरणा एवं प्रोत्साहन भी दिया।

अनुसंधान में उत्पन्न प्रश्न -

नाटक में अभिनय का महत्व अधिक होता है। हम ऐसा भी कह सकते हैं कि अभिनय के बिना नाटक अधुरा है। इसलिए अभिनय को लेकर नाटकों का संशोधन किया जा सकता है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का अध्ययन करते समय मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न थें-

१. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने अपने जीवन काल में किस प्रकार के साहित्य की निर्मिति की है ?
२. नाटकों के मूल विषय क्या है ?

३. नाटकों की कथावस्तुएँ ; क्या तत्संबंधित रंगमंचों के नजदीक हैं ?
४. क्या नाटकों के पात्र अभिनय की कसौटियों पर खरे उतरते हैं ?
५. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटक अभिनय की विशेषताओं की दृष्टि से कहाँ तक सफल हैं ?
६. हिंदी नाटक की अभिनय परम्परा में सक्सेना जी का क्या स्थान है ?

अध्ययन के उपरांत मुझे उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो गए हैं। उन्हें मैंने उपसंहार में लिखा है।

अध्याय विभाजन -

अध्ययन सुविधा के लिए मैंने अपने लघु-शोध प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय को प्रस्तुत किया है।

प्रथम अध्याय :- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस अध्याय में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के जीवन का परिचय दिया है। उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, माता-पिता, जन्म तथा बचपन, संस्कार और शिक्षा-दिक्षा, घरेलु वातावरण, उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ तथा उनकी रचनाएँ इन सभी बातों का विवरण प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय :- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का परिचयात्मक अध्ययन

इस अध्याय में मैंने सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का नाटकों की शिल्पगत प्रवृत्तियों के अनुसार स्थूल परिचय दिया है।

तृतीय अध्याय :- हिंदी नाटक में अभिनय परम्परा और नाटककार सर्वेश्वर

इस अध्याय के अन्तर्गत अभिनय का स्वरूप और परिभाषाओं को प्रस्तुत कर हिंदी नाटकों की अभिनय परम्परा को बताया है। इसमें हिंदी नाटक के अभिनय के प्रारंभ को बताकर उस परम्परा के विकास का काल-विभाजन किया है। काल विभाजन के अन्तर्गत भारतेंदु युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्तर युग, साठोत्तरी युग का समावेश है। अंत में अभिनय परम्परा में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के योगदान को दर्शाया है।

चतुर्थ अध्याय :- कथावस्तु तथा पात्रयोजना (अभिनेयता की दृष्टि से)

इस अध्याय में सक्सेना के 'बकरी' , 'लडाई' और 'अब गरीबी हटाओ' नाटकों का अभिनय की दृष्टि से कथावस्तु और पात्रों का समीक्षण किया है ।

पंचम अध्याय :- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में अभिनेयता

पंचम तथा अंतिम अध्याय के अन्तर्गत सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के बकरी , लडाई , अब गरीबी हटाओ नाटकों में अभिनेयता का विवेचन किया है । इसमें अभिनेयता का अभिनय , निर्देशक , संवाद , भाषा , दृश्यसज्जा , रूपसज्जा , संगीत योजना व ध्वनि तथा प्रकाश-योजना आदि के अनुसार अध्ययन किया है ।

अंत में उपसंहार है जिसमें पूर्व नियोजित अध्यायों के वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक पद्धति से निकाले गए निष्कर्ष दर्ज किये हैं । अंत में आधार ग्रंथ एवं संदर्भ ग्रंथ सूची दी है ।



ऋण निर्देश

इस लघु-शोध प्रबंध का प्रयास श्रद्धेय डॉ. के.आर.पाटील जी के कुशल निर्देशन का प्रतिफल है। मेरा यह सौभाग्य है कि उन जैसे कुशल निर्देशक मुझे प्राप्त हो गए। डॉ. के.आर. पाटील जी के आत्मीय सहयोग और उचित मार्गदर्शन के कारण मैं यह शोध कार्य पूरा कर सका। इस ऋण से मैं कभी मुक्त नहीं हो सकता।

इस शोध कार्य को उचित दिशा देने का कार्य पूज्य गुरुवर्य डॉ. श्री. वसंतराव मोरे जी ने किया है। मैं उनके प्रति सहृदयता व्यक्त करता हूँ।

आदरनीय गुरुवर्य डॉ. श्री. पांडूरंग पाटील जी भूतपूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर का समय-समय पर प्राप्त मार्गदर्शन; मेरी उम्मीद तथा जिज्ञासा बढ़ाता रहा। मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

मेरे माता-पिता का वात्सल्य और आशीर्वाद मेरे जीवन की अमूल्य पूँजी है। मेरी पूजनीय माताजी सुशिला देवी तथा पिताजी की प्रबल इच्छा एवं शुभाशीर्वाद से ही इस लघु-शोध प्रबंध ने आकार धारण किया; अतः माता-पिता के प्रेम से तो मैं कभी उऋण नहीं हो सकता। उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना औपचारिकता निभाना नहीं है, वह मेरी नैतिक जिम्मेदारी भी है। मेरे भाई सुहास शिंदे को इस लघु-शोध प्रबंध की पूर्णता का श्रेय जाता है।

इस शोध कार्य को पूरा करने के लिए शाहूवाडी तहसील के भूतपूर्व विधानसभा सदस्य तथा जेष्ठ कार्यकर्ता श्री. राऊ धोंडी पाटील (आबा) ने बार-बार प्रोत्साहित किया है। मैं उनके प्रति सहृदयता व्यक्त करता हूँ।

इस शोध कार्य को पूरा करने के लिए राजर्षी छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापूर के प्राचार्य श्री. व्ही.व्ही. भोसले तथा ग्रंथपाल सुहास सावंत, मेरे मित्र प्रा. अशोक चव्हाण, प्रा. जगदीश ससाणे, प्रा. आर.एल. राज्योपाध्ये, प्रा. बी.एम. वाघ, प्रा. भुजंगराव खरात आदि मुझे सहानुभूति से प्रोत्साहित करते रहें। कर्मवीर भाऊराव पाटील महाविद्यालय, पंढरपुर के प्राचार्य वलेकर, हिंदी विभागाध्यक्ष, डॉ. श्री.एम.पी.जाधव, डॉ. एफ.एस. बिजापुरे, प्रा. समाधान माने,

डॉ. संजय गायकवाड , प्रा. विकास घाडगे, प्रा. किशोर जाधव , प्रा. महादेव तहसिलदार आदि ने भी प्रोत्साहित किया । अतः इन सभी लोगों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

मेरे मित्र परिवार के सदस्य श्री. नवनाथ पाटील, श्री. जितेंद्र कांबळे, श्री. भागवत कांबळे, श्री. रमेश खबाले , श्री. रसीद तहसीलदार आदि की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन मुझे निरंतर मिलता रहा ।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध के लिए आवश्यक पुस्तकें बॅ. बालासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर, राजर्षी छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापुर तथा कर्मवीर भाऊराव पाटील महाविद्यालय, पंढरपुर से प्राप्त हो सकी हैं । अतः इन ग्रंथालयों के ग्रंथपाल एवं कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ ।

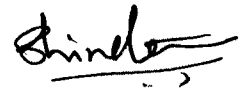
टंकलेखन के लिए पंढरपुर महाविद्यालय का संगणक कक्ष उपयोगी रहा । प्रा.श्री. के.एस. काकडे, श्री. राजेंद्र मोरे और प्रा. अशोक ठोंगिरे इनकी मदद बढौलत टंकन कार्य पूरा हो सका ।

टेढे-मेढे रास्ते से चलने वाले बालक की तरह मेरा यह प्रयास रहा है । इसमें जो कुछ त्रुटियाँ हैं, उनका निराकरण करने का प्रयत्न कर चुका हूँ । फिर भी भूल से कुछ त्रुटियाँ रह जाने की संभावना है । अतः इन त्रुटियों को स्वीकार करते हुए आप से क्षमा चाहता हूँ ।

अंत में उन सभी के प्रति आभार प्रकट करना कर्तव्य समझता हूँ , जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरणा , प्रोत्साहन और सहायता दी है ।

कोल्हापुर ।

दि-


शोधछात्र,

(श्री. शिवराज गणपती शिंदे)

अनुक्रमिका



सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के नाटकों में अभिनेयता

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	अध्याय का नाम	पृ.क्र.
--------	---------------	---------

१. प्रथम अध्याय

१-१६

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना: व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

प्रस्तावना

अ] सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जीवन परिचय

१. जन्म

२. माता

३. पिता

४. बाल्यकाल

५. शिक्षा

६. पारिवारिक जीवन

७. कार्यक्षेत्र

८. सम्मान एवं पुरस्कार

९. देहावसान

आ] सर्वेश्वर दयाल सक्सेना : व्यक्तित्व

(क) बाह्य व्यक्तित्व ।

(ख) आंतरिक व्यक्तित्व ।

१. परिश्रमी एवं आत्मनिर्भर ।
२. गरीबों के प्रति आस्था ।
३. सहृदय व्यक्ति ।
४. समाज सेवक ।
५. विद्रोही ।
६. अलिप्तता ।
७. ग्रामीण जीवन से लगाव ।
८. स्पष्टवादिता ।
९. निष्पक्षता ।
१०. प्रेरक व्यक्तित्व ।

इ] सर्वेश्वर दयाल सक्सेना : कृतित्व

१. कहानी
२. उपन्यास
३. नाटक
४. एकांकी
५. बाल साहित्य
 - (i) नाटक
 - (ii) कविताएँ
६. यात्रा-साहित्य
७. अनुवाद
८. संपादन
९. पत्रकारिता

व्यक्तित्व और कृतित्व का परस्पर संबंध ।

निष्कर्ष

संदर्भ

२. द्वितीय अध्याय

१७-२८

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों का परिचयात्मक अध्ययन ।

प्रस्तावना

१. 'बकरी' नाटक का परिचयात्मक अध्ययन ।

२. 'लडाई' नाटक का परिचयात्मक अध्ययन ।

१. 'अब गरीबी हटाओ' नाटक का परिचयात्मक अध्ययन ।

निष्कर्ष ।

संदर्भ ।

३. तृतीय अध्याय

२९-५४

हिंदी नाटकों की अभिनय परम्परा और नाटककार सर्वेश्वर ।

प्रस्तावना

अभिनय: परिभाषाएँ

(i) अंग्रेजी परिभाषाएँ ।

(ii) संस्कृत परिभाषाएँ ।

(iii) हिंदी परिभाषाएँ ।

अभिनय का स्वरूप

१. अंगिक अभिनय ।

२. वाचिक अभिनय ।

३. सात्विक अभिनय ।

४. आहार्य अभिनय ।

हिंदी रंगमंच ।

अभिनेय नाटक और अभिनय परम्परा ।

(क) हिंदी अभिनय का प्रारंभ ।

(ख) हिंदी अभिनय का विकास

अ] भारतेन्दु युग (शैशवकाल) सन् १८६० से १८८५ ई. तक

आ] प्रसाद युग (संधिकाल) सन् १८८५ से १९३० ई. तक

इ] प्रसादोत्तर युग (प्रौढ़काल) सन् १९३० से १९६० ई. तक

ई] साठोत्तरी युग (प्रौढ़तरकाल) सन् १९६० से १९८० ई. तक

अ] भारतेन्दु युग (शैशवकाल) .

भारतेन्दु युगीन नाटकों में अभिनय ।

आ] प्रसाद युग (संधिकाल)

प्रसाद युगीन नाटकों में अभिनय ।

इ] प्रसादोत्तर युग (प्रौढ़काल)

प्रसादोत्तर युगीन नाटकों में अभिनय ।

ई] साठोत्तरी युग (प्रौढ़तरकाल)

साठोत्तरी युगीन नाटकों में अभिनय ।

निष्कर्ष ।

अभिनय परम्परा में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का योगदान ।

समन्वित निष्कर्ष ।

संदर्भ ।

४. चतुर्थ अध्याय

५५-८४

कथावस्तु तथा पात्र : अभिनयेता की दृष्टि से ।

प्रस्तावना

अ] कथावस्तु

१. बकरी
२. लडाई
३. अब गरीबी हटाओ

निष्कर्ष ।

आ] पात्र

१. बकरी
२. लडाई
३. अब गरीबी हटाओ

निष्कर्ष ।

समन्वित निष्कर्ष ।

संदर्भ ।

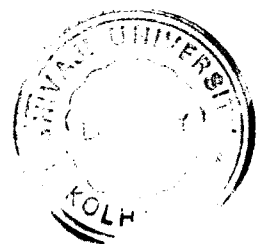
५. पंचम अध्याय

८५-११५

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटकों में अभिनेयता ।

प्रस्तावना

१. अभिनय
२. निर्देशन
३. रूपसज्जा
४. दृश्यसज्जा
५. ध्वनि-संयोजन
६. प्रकाश-व्यवस्था
७. संवाद
१. स्वाभाविकता ।



२. पात्रानुकूलता ।
३. संक्षिप्तता ।
४. प्रवाहमयता ।
५. प्रभावशाली संवाद ।
६. उच्चारणशीलता और कंठस्थपूर्णता ।

८. भाषा

१. सरल एवं रोचक भाषा ।
२. सुबोध एवं स्पष्ट भाषा ।
३. पात्रानुकूलता ।

उपसंहार ।

११६-१२०

संदर्भ ग्रंथ सूची ।

१२१-१२२